60

पंचदेव

ज ग दी श प्र सा द म ण्ड ल सा हि त्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-88421-37-9

दाम : ₹50/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 60
Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

अपन रोपल गाछी भुताहि

रामनवमी दिनक बेरुका उखड़ाहाक पाँच बजेक समय। अनेको लॉडस्पीकरसँ सूर भरल गीत-नाद गाममे अनघोल केने...। कोनोसँ अवाज निकलै- 'रामराजमे सभ बरबैर..!' तँ कोनोसँ निकलै- 'दैहिक-दैविक भौतिक ताप रामराजमे नहि रहि पबैत..!' तँ कोनोसँ अवाज निकलै- 'रघु कुल रीत सभ दिनसँ आएल, प्राण जाएत तँ जाएत मुदा वचन नहि जाएत..!'

अनघोल वातावरण रहने रघुवीर कक्काक मन सेहो घोर-घोर होइत रहैन।

अपन साठि बर्खक बीतल जिनगी दिस नजैर देलैन। पाछू घुमिते अपन बाल-बोधक जिनगीक मिलल रूप–विद्यार्थी जीवन–होइत अपन चालीस बर्खक समाज सेवाक बीच जखन एलैन तँ मन ओझराए लगलैन।

केतेको प्रश्न मनमे उठए लगलैन जे जखन अपना जनैत केकरो ने अधला सोचलिऐ आ ने अखनो सोचै छी आ ने केकरो अधला केलिऐ आ ने अखनो करै छिऐ, तखन लोक किए अधला करैपर उताहुल भेल अछि? माने ई जे समाजेक लोक समाजोक लोककेँ आ तैसंग अपनो आ हमरो किए अधले नजरिये देखबो करैए आ करबो करैए..?

रघुवीर कक्काक मनमे एकाएक ठनका जकाँ ठनक जगलैन। जगिते बकार फुटलैन-

“अपन रोपल गाछी भुताहि! जइ समाज रूपी गाछीकेँ रोपि समाजरूपक माली बनि सेवा करैत अखन तक आबि रहल छी ओ एना भुताहि किए बनि रहल अछि..!”

रघुवीर कक्काक ठनकल मन रहबे करैन, चोटे पाछू उनैट तकला तँ बुझि पड़लैन जे केतौ-ने-केतौ एहेन रोगक प्रकोप भीतरे-भीतर भेल अछि, जे चाहे बाँकी रूपमे हुअए आकि आने-आन कोनो रोगसँ गरसित भेल हुअए, मुदा भेल तँ जरूर अछि..!

रघुवीर काका जेते विचारकेँ सोझराबए चाहैथ तेते ओझरी लगि-लगि जाइत रहैन। कोनो एहेन उत्तर मनमे जगबे ने करैत रहैन जे पेब मन हल्लुक होइतैन।

गुम-सुम भेल रघुवीर काका अपन मनक घोड़ाकेँ चारूदिस दौड़ा-दौड़ा ताकए लगला मुदा आँखि देखबे ने करैन! भाय आँखि देखब ओते असान थोड़े अछि जे लगले देख जाएब..? तही बीच चाह नेने पत्नी पहुँच कहलकैन-

“चाह पीब लिअ, पान खा लिअ आ रामनवमी दिन छीहे रामराज देखए चलू।”

ओना, तैबीच रघुवीर काका चारि-पाँच घोंट चाह पीब नेने छला तँए मनक ओझराएल विचार पतराए लगल छेलैन, ओना सोलहन्नी नइ पतराएल रहैन तँए पत्नीक बात सुनि तामस तँ नइ उठलैन मुदा झड़क जरूर उठलैन। झड़कवाहि उठिते मन नचलैन। नचैत मनमे एलैन जे एक दिस पत्नी कहि रहली अछि- ‘रामनवमीक मेला छी, देखैले चलू।’ आ दोसर दिस अपन मन रूपी पति लोकक लीला देख-देख घोर-घोर भेल अछि! तैठाम की मेला देखब आ कोन मेला देखब..? मुदा लगले होनि जे

पति-पत्नीक बीच तँ एहेन पार्टनरशीप ऐछे जे अदहा-अदहा बँटवारा अछि। अपने किछु छी तैयो अदहे छी आ पत्नियेँ किछु छैथ तँ अदहाक मालिक छथिए...।

रघुवीर काकाकेँ किछु फुरबे ने करैन जे की केने की हएत। थोड़ेकालक पछाइत, चाह जखन अदहापर एलैन–माने अदहा गिलास जखन पीब लेला–तखन एकटा जुकती मनमे औनाइत खसलैन। खसलैन ई जे केतबो अदहाक मालिक पत्नी किए ने होथि मुदा छैथ तँ पत्नियेँ। बहला-फुसला अधिक हिस्सा लाइए सकै छी। कक्काक मन कनी सुगबुगेलैन।

सुगबुगाइते बजला-

“जखन मेला देखए जाएब, तहूमे जुड़शीतलक धुर-खेल तँ छी नहि जे ‘जय-शिव, जय-शिव’ करैत मेला घुमि लेब। रामनवमी छी। रामक जनम दिनक उछाही जेकरा छै ओ तँ आइ की-की ने लूटाएत मुदा हमरा बुते तँ अहूँकेँ खुशी-खुशी मेला देखौल नइ हएत।”

ओना, रघुवीर कक्काक बात सुनि काकीक मन मधुआ गेल छेलैन मुदा तैयो लाड़-झाड़ करैत बजली-

“जइ दिनसँ बाप-माइक घर छोड़ि एहेन जरल घर एलौं जे कोनो मनोरथ पूर नइ भेल।”

एक तँ पहिनहिसँ रघुवीर कक्काक मन भुतियाएल रहबे करैन, जेकरा समेट समाज-परिवारसँ हटि पत्नी लग पहुँचल छला, तैठाम तेहेन बज्जर सन कथा भेटलैन जे मन आरो चुरम-चुर भऽ गेलैन। चुरम-चुर होइत मनकेँ कहुना-कहुना बीछि-बीछि कऽ समटलैन।

समैटते मन बिहुसलैन, बिहुसिते बकार फुटलैन-

“हम तँ चाह अदहा पीब नेने छी अहाँ पीलौं?”

पतिक बात सुनिते सितियोकाकी सभ लाड़-झाड़ समटैत बजली-

"नइ कहाँ पीलौं हेन। हम कि कोनो औझुका लोक छी जे पतिकेँ बिना खुऔनहि-पीऔने अनजल कऽ लेब! अखुनका लोक ने टेस्ट करैत अपनो टेस्ट करैए जे नीक-बेजाए-क विचार पति करता कि पत्नी। हँ, जैठाम सूर्यक उदय अछि तैठाम पतिक की दशा छैन सेहो तँ सबहक सोझहे अछि।"

सितिया काकीक सिताएल विचार सुनि रघुवीरो कक्काक मन सिता गेलैन। सिताइते बजला-

"अदहे गिलास चाह पीलौं हेन अखन अदहा बाँकीए अछि तँए जँ आँगनमे कोशलौने होइ तँ जा कऽ पीब लिअ, नहि तँ अदहा रखने छी लीअ पीबू।"

पतिक बात सुनि सितिया काकी लजा गेली। लजा ई गेली जे खाइ-पीबैक कारोबारी तँ अपने छी किने तैठाम जँ मौगियाही चालि पकैड़ जे परिवार रहत, माने परिवार रहत दस गोरेक आ सिदहा लगाएब सात गोरेक जे खाइत-पीबैत रस्तेमे सठि जाएत! ओइ परिवारमे विवाद हएत की नहि? हेबे करत, जखने खाइक भोजन रस्तामे सठत तखने ने किछु गोरे खा कऽ सुखे ढेकार करत आ किछु गोरेकेँ भुख ढकार करए पड़तैन। जखने दुनू ढकार हएत तखने दू रंग हवा चलबे करत, तैठाम के दोखी हएत? हँ! एहेन संभव अछि जे उपार्जनकर्ता भरपूर उपारजन, कोनो कारणे नइ कए पबैत होथि मुदा ई तँ हमरे ने बुझए पड़त। भरि थारी नहि, हिस्से भरि।

हँ! एहनो संभव ऐछे जे दस गोरेक भोज्य-विन्यासमे, वस्तुक वाहुल्य देख, दस गोरेक जगह पनरह गोरेक बना रस्ता-पेरापर फेक गन्दा करबै सेहो केहेन हएत? मन कहलकैन- तखन? तखन तँ यएह ने हएत जे जहिना छबे-छबे खेत बढ़ैए, कौरे-कौरे पेट बढ़ैए तहिना रसे-रसे बुधियो-बेवहार ने सिखैत-सिखैत सीखि चलैए।

सितिया काकी अपन लड़-झड़क चालि-प्रकृति पकैड़ बजली-

“जहिना हमर अदहा गिलास तहिना ने अहूँक अदहा भेल, तैठाम अपन-अपन दायित्व तँ निमाहए पड़त किने।”

पत्नीक बात सुनिते रघुवीर काका बजला-

“शुभ काजमे अपने ने देरी करै छी, दसटा हॉर्नक अवाज जे कानक ठेकीकेँ केतबो ठेलत तइसँ की हेतइ। नीक जकाँ बनि-ठनि कऽ मेला देखए चलू, अहीं संगे हमहूँ जाएब।”

‘अहीं संगे हमहूँ जाएब’ सुनि माने पतिक बिसवासू विचार सुनि सितिया काकी विस्मित हुअ लगली।

पत्नीकेँ विस्मित होइत देख रघुवीर काका बजला-

“तेते ने लॉडस्पीकरक अवाज आबि रहल अछि जे अहाँकेँ सुनैमे रामनौमीए-टा अबैए मुदा चैती नवरात्राक नौमी सेहो छी। तँए दुनूक बीच छी, कोन मेला देखए जाएब से पहिने विचारि लेब तखन ने घरसँ डेग उठाएब।”

रघुवीर कक्काक बात सुनि सितिया काकी औनेली नहि, ऐ दुआरे नै औनेली जे भगवतीक आराधना–नवमीक मेला–आ रामनवमीक मेला–तहूमे केते सालक पछातिक राम जन्मोत्सव छी–दुनूमे अन्तर तँ अछिए। ओना, ओइ दिस सितिया काकीक नजैर नइ गेलैन। रस्तेमे अँटैक रामनवमीए दिस बढ़ि गेलैन।

पतिक विचारकेँ सोल्होअना अनदेखी करी, सेहो केहेन हएत। सितिया काकीक मन उमुर-घुमुर करए लगलैन। कोनो रस्ते ने देखैथ जे आगू की केने दुनू बेकती मिलानसँ मेला देखए जइतैथ। मुदा लगले जुकती फुरलैन। जुकती ई जे रामनौमियो मेला छी आ नवरात्रियोक मेला छी, मुदा छी तँ दूनू मेले, तँए किए ने दुनू मीलि मेल-मिलान-मिलाप करैत मेला जाइ...।

सितिया काकीक मन मानि गेलैन जे पतियेपर किए ने जहिना सीता रामकेँ माता-पिता बोन जाइले छोड़ि देलखिन तहिना हमहूँ आश्रित भऽ मेला देखए जाय।

ओना, सितिया काकी धड़फड़मे अपने भरिक विचार कऽ लेली, जइसँ नजैरमे ई एबे ने केलैन जे नारियोक रूप अरूप अछि। केतौ नारी अपन इज्जत-आवरू-ले अपने बलिक बकरा बनि रक्तसँ धरती सींचै छैथ तँ केतौ दर्जन भरि बाल-बच्चावाली दूधमुहाँ बच्चाकेँ पतिक सिर मेढ़ि दोसर घरक बरक पूजा नइ करै छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

सितिया काकी नजैर उठा रघुवीर काकापर देलैन, मुदा बजैक जे विचार रहैन ओ मनेमे घोंटाइत रहलैन जे रघुवीर काका बुझि गेलखिन। मुस्कुराइत रघुवीर काका बजला-

“जखन मेला जाइक विचार मनमे उठल, तखन नहियोँ जाएब मनकेँ मारब हएत किने। से नहि तँ झब-दे चाह पीब बनि-ठनि कऽ आँगनसँ तैयार भेल आउ।”

पतिक बात सुनि सितिया काकी ठमकली। ने आँगन दिस डेग उठैन आ ने मेला जाइ दिस विचार उठैन।

मेला तँ मेला छी दुनियाँक मेला। जे दुनियाँक कोण-कोणमे पसरल अछि। अयोध्या जे रामक जन्मभूमि छिऐन, ओइठामक सोहान आ जनकपुरक सोहान, जे सासुर छिऐन, दुनू एक्केरंग थोड़े हएत। तैसंग गाम-गाम आ परिवार-परिवारक आराध्य देव रहने गाम-परिवारक संग बेकतीगत सेहो पूज्य छथिए, तैठाम केते दूर तक देखल जाए ई तँ नजैर-नजैरिक खेल छी किने?

ठमकल पत्नीक रूप देख रघुवीर कक्काक मनमे परिवारक ओइ अभिभावक (रक्षक) जकाँ विचार उठलैन जिनका लेल एक दिस घर-परिवारक गाड़ीकेँ आगू ससरब कठिन अछि आ दोसर दिस पाछूसँ कोनो

सहारो नहियेँ अछि, माने हाथ सोलहन्नी खाली...। तैठाम पत्नीक रूप बदैल सियाही सन सियाह बनियेँ रहल छेलैन, तँए विचारकेँ आगू करैत रघुवीर काका बजला-

"मेला देखए नइ जाएब तँ नहि जाउ, मुदा दुनू परानी एकठाम रहैत जे चुपा-चुपी केने छी से हमरा नीक नहि लगैए।"

जहिना कोनो पशु आँखिक इशारा मात्र पेब फुरफुरा उठैए आ कोनो अँड़पेन देला पछाइतो नहि उठए चाहैए तेना सितिया काकीकेँ नहि भेलैन, ओ अपनो बले उठैत बजली-

"मेला देखी वा नइ देखी, जहिना छी तहिना तैयार भऽ टहैल आबए चलू।"

पत्नीक विचार सुनि रघुवीर कक्काक मनमे खुशी उपकलैन- जे पत्नियेँ ने लक्ष्मियो आ लक्ष्मीपात्रो छैथ जे अपन विभव देख अपन शक्ति अजमा घरसँ बाहर दुनियाँक मेला देखए चाहै छैथ। बजला-

"बड़बढ़ियाँ कहलौं। मुदा गामो तँ गामे छी किने, कोनो कि शहर-बजार छी जे पतियानी लगा बनत। जेकरा जेतए अँटावेश होइ छै से तेतए बसि जाइए तँए शहर जकाँ एकपेरिया तँ नहि अछि, अछि तँ बहुपेरिया तखन कोन रस्ते जाएब शुरू करब, ई विचार तँ अखने ने कऽ लेब।"

ओना, सितिया काकीक नजैर (मन) अखन धरि आन-आनकेँ जे देखने छेली तेही हिसाबक छेलैन, तँए आगू दिस तकैक ने खगते पड़लैन आ ने तकबे केलीह। जखन खगते नहि तखन कियो ओरियाने कथीक करत। अनेरे दुनियाँक बोनमे जे असगरे वौआएत, से कथीले? मुदा रघुवीर कक्काक विचार ठनका जकाँ सितिया काकीक मनमे खसले छेलैन। तैपर तेहाला (तेसर बेकती) कियो अछियो तँ नहियेँ जे कनी-मनी टपो-टोइया आकि संगो-साथ दइत। असगरमे दुसगर होइते छइ। मुदा

लगले मन कलशलैन।

कलैशते चैती गाछक नवटुस्सा जकाँ मन काकीक टुसियेलैन, टुसियाइते बजली-

“जखन दुनू परानी अदहा-अदहा घरसँ बाहर धरिक दुनियाँ बाँटि नेने छी तखन अपन विचारक विचार अपने ने पहिने ओइ मुहसँ देबै जइ मुहसँ विचार निकलल, पछाइत ने हमर पार औत?”

सितिया काकीक ‘पत्नी रूप’कें पति–रघुवीरकाका–देखलैन। देखते मन गवाही देलकैन जे अपन विचार पत्नी पूर केने बजली अछि, ओकरा पुराएब तँ अपने दायित्व छी किने। मुदा मुहसँ तँ वएह ने निकालब जे ओकर मुँह केमहर छइ? जाबे मुँह नइ देखब ताबे मुँह मिलानी केना करब आकि मुँह मिलान हएत केना..?

जहिना सम्पन्न फड़ल आमक गाछपर अनठेकानियोँ गोला फेकलासँ गोटे पाकल आम खसिये पड़ैए, मुदा की ओकरा ठेकानल कहब आकि ओ बेठेकानले भेल। मुदा बेठेकानलो तँ ठेकानल भइये गेल जे तोड़ि के अनलक।

ओना, ठेकानल तँ ओ ने भेल जे ठेकना कऽ–माने लक्ष्य करि कऽ–गोला ओइ आमपर फेकलौं जइ आमपर मन गड़ल छल। गाछमे तँ सोहरी लागल आम ऐछे मुदा जेते अछि तेते खगतो नहियेँ ने अछि। आकि सभटा हमरे-ले अछि जे गोट-गोट कऽ तोड़ि लेब..! रघुवीर काका बजला-

“जहिना देश सेवा, मानव सेवा देश भक्ति छी तहिना भक्तिक बीच अभक्ति आ सभक्ति केहेन अछि ओ बिना बुझने भक्तियो केना करब..?”

ओना, अपना जनैत रघुवीर काका सोझराएले बात बजला मुदा सितिया काकी नीक जकाँ नहि बुझि पेली। ने ई बुझि पेली जे पतिक

विचारक आगू अपने अदहे छी। तँए पिपाशु पक्षी जकाँ सितिया काकी रघुवीर काका दिस मुँहक दोसर बोल सुनैले आँखि उठौली।

मने-मन रघुवीर काका सितिया काकीक विचारकेँ तारि रहल छला। तारिते भारैत बजला-

"जहिना दुनियाँक बोनमे सभ हेराएल अछि तहिना अपनो दुनू परानी तँ छीहे, तँए मेला देखैसँ पहिने मेलाक रस्ताक प्रण मनमे रोपए पड़त तखन ने मेलाक रस पीब, नहि तँ लोकेक भीड़ देखैत चलि आएब!"

ओना, अखन धरि सितिया काकी मेलाक वएह रूप बुझै छेली, मुदा पतिक अनमोल विचार सुनि थकमकेली। मन कहलकैन अपने की बुझि रहल छी आ पतिक मुहेँ की सुनि रहल छी..! ओना, सितिया काकी जिद्दयाहि स्त्रीगणक श्रेणीमे अबिते छैथ मुदा ने जिद्द धरैक विचार सक्कत छैन आ ने जिद्द पकड़ैक मन मजगूत छैन। मुदा आइ तँ रामनवमीक मेलाक संग नवरात्राक नवमी मेला सेहो छी..! सितिया काकी बजली-

"एना जे झाँपल-तोपल श्लोक बचै छी तइसँ नइ हएत, हमरा मुरकुट्टियेमे कहू जइसँ मन मानि जाए।"

पत्नीक सिनेह भरल पिपाशु मनकेँ जँ रघुवीर काका नहि थतमारि सकैथ, ई केहेन होएत। तहूमे ओ पत्नी जे जहियासँ माता-पितासँ उत्सर्जित भऽ हाथ पकड़ने एलैन, ओ केना हाथ पकड़ने आगूओ चलतैन ई तँ विचारणीय प्रश्न रघुवीर कक्काक मनमे रहबे करैन...।

जहिना कोनो विचार चितासन्न भेला पछातिये नव विचारक संग नव जीवन दइए तहिना काकाकेँ भेलैन। ओना, जहिना सितिया काकी मने-मन विचारकेँ घोंटि रहल छेली तहिना मने-मन घोंटैत रघुवीरो काका अपन जिनगी पढ़ए लगला।

चालीस बर्ख पूर्वसँ, जइ गाम-समाजमे साइयो रंगक छुआ-छूत पसरल अछि–माने जातियेटा मे नहि आनो-आनोमे–तँए ओइ समाजमे

एकरूपता आनब तँ ओइ समाजक प्रमुख क्रिया भेबे कएल। जँ से नहि भेल तँ सदिकाल करवनो किछु-ले तँ करवनो किछु-ले हल्ला-फसाद, झगड़ा-झंझट होइते रहत आ समाजो टुटिते रहत। तँए जाबे कोनो बेवहारिक बन्धन–माने बेवहारिक चलैन–केँ एकसूत्रमे नहि आनि चलब ताबे समाजमे एकसूत्रताक जड़ि केना जड़ियाएत..?

यएह सभ विचार मथन करैत रघुवीर काका समाजक बीच अपन विचार रखलैन जे जखन सभ मनुखे छी तखन सभ एकठाम बैस किए ने खाएब-पीब। अनेरे, छुत-अछुतक बीच बँटल छी..!

रघुवीर कक्काक विचार संजीवनी जकाँ समाजकेँ जीवनदात्री बुझि पड़लैन, समाजक सभकेँ विचार नीक लगलैन। ओना, रंग-रंगक अरचन बीचमे उठैक संभावना सेहो बुझिये पड़लैन, जइसँ विचारक संग बाटो टुटैक संभावना अछिए। मुदा गामक अधिकांश परिवारक एकमुँहरी विचार भऽ गेलैन।

समाजो तँ समुद्रे जकाँ अछि। जहिना समुद्रमे हरण, मरण आ जरन सदिकाल चलिते रहैए तहिना समाजोमे तँ होइते अछि। सएह भेल। एक गोरेक वृद्ध बाबाक मृत्यु भेलैन। जहिना सभ एकठाम बैस खाइ-पीबैक विचार केने छला तहिना सभ लोरिक बरियात जकाँ जरबैयो-ले गेला। जइसँ सबहक भेँट सभकेँ असमसान घाटमे भेबे केलैन। असमसाने घाटपर ने असमानक मन्दिर सेहो अछि। जे करवनो बरफवारी करैए तँ करवनो जलवारी आ करवनो अगवारियो तँ करिते अछि...। ओना, जइ रोगक निदानक बाट पकैड़ समाजक कर्णधार उठि कऽ ठाढ़ हुअ चाहै छला ओइ दिस ओइसँ पहिने–माने वृद्धक मृत्युक पूर्व–सेहो कनी-कनी डेग उठा नेने छला जइसँ समाजमे आड़िक माने बन्धनक टुट-फाट सेहो शुरू भऽ गेल छल। जइसँ जाति-जातिक बीच विचार संघर्षक संग बेवहारमे सेहो उतैर रहल छल। मुदा आगि लगलेपर ने कुकराहा सेहो उड़ैए जे दोस्त-दुश्मनक भेद खतम करैत केकरो घरमे लगि जाइए। सेहो

भइये रहल छल। जइसँ समाजक कोढ़-करेज खोखैर खाइबला बेवहार जरिये रहल छल।

ओना, समाजमे समाजिक बन्धन हौउ आकि देशमे देशक बन्धन, मुदा सभ–समाजिक संगठनो आ राजनीतिक दलो–मंचपर एकरा अधला कहिते छैथ, भलेँ परोछमे एकरे बले–माने छुआ-छुतेक बले–नचबो-गेबो किए ने करैत होथि।

ओना, जहिना समाजो तहिना राजनीतिक दल सेहो अछिए। जे कियो हाथीक नाँगैर पकैड़ हाथीक परिचय दइ छैथ तँ कियो हाथीक सूढ़ पकैड़ आ कियो हाथीक टाँग पकैड़, मुदा सभकेँ तँ देखैक अपन-अपन दाबी छैन्हे जे असल हाथीक परिचय हमरे अछि।

भलेँ सभ अपन-अपन दाबी अपने-अपने घरमे किए ने रखैत होथि मुदा समस्यो तँ समस्या छी। जहिना समाजकेँ समाजक मंचपर आबि संकल्पक संग अंगीकार करैत बेवहारिक धरातलपर आबए पड़तैन तहिना राजनीतिक दलकेँ समाजिक मंचपर चढ़ि समाजकेँ राजनीतीकरण करैक संकल्पक संग जमीनी सच्चाइकेँ प्रतिपादित करए पड़तैन। जा से नइ हएत ता दिल्लीक लड्डु बनैत रहत, रामनवमीक संग नवरात्राक नवमीक मेला अबैत-जाइत रहत।

रघुवीर कक्काक मनमे सेहो नव विचार जगलैन जइसँ मन मुस्कियेलैन। मुस्कियाइत मन रघुवीर कक्काक विचारकेँ टुस्कियौलकैन। टुस्कियाइते विचार चैती कलश जकाँ भकरार हुअ लगलैन। भकरार होइते मुहसँ निकललैन-

“चलू जे राम से राम, रस्ते-रस्ते चलबो करब आ गपो-सप्प करब, भलेँ मेला देखी आकि नहि देखी।”

रघुवीर कक्काक विचारकेँ केते दूर तक सितिया काकीक सिताएल मन बुझलकैन से तँ ओ अपने जानैथ आ जानैथ सुनयना दादी मुदा

रघुवीर कक्काक मनमे बिसवास जगबे केलैन। विस्मित होइत सितिया काकीकेँ जहिना माइयक गोदमे बैसल बच्चा अपन जिनगीक सोग-पीड़ा बिसैर चैनक साँस लइत अरामसँ जीवन मुक्त भऽ सुतैए तहिना पतिक खलियाएल गोद देख मनमे जगलैन।

जगिते मनमे उठलैन- चालीस बर्खसँ आइ माने पूबसँ पच्छिम, की देख रहल छी? की अपन रोपल गाछी भुताहि भऽ गेल..?

ओना, टुटैत-बँटैत समाजकेँ देख जेते चिन्तित रघुवीर काकाकेँ हेबा चाहिऐन से नइ छैथ, मुदा चिन्ता नइ छैन सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

कम चिन्तित हेबाक कारण छैन जे जेतए-जेतए एहेन बान्हक बन्धन अछि तइ बन्धनकेँ या तँ तोड़ि लेलैन वा छोड़ि-छाड़ि देलखिन। जइसँ हिमालयक तराइक सघन बोनमे जहिना ने केतौ रस्ता रहै छै आ ने बिनु रस्तेक कोनो जगह खाली छै, गाछक बोन छै अपन-अपन अँगना-घर सभ बनौनहि अछि।

सूर्यास्त होइते एक दिस घड़ी-घन्टक अवाज भेल तँ दोसर दिस आरती गायन। सितिया काकी बजली-

“गपे-सप्पमे रहि गेलौं, चाहक बेर सेहो भेल। अहूँ तैयार हौउ आ हमहूँ चाह बनौने अबै छी।”

पत्नीक पत्नीत्व देख रघुवीर कक्काक मनमे सामक समत्व विचार जगलैन मुदा बजला किछु ने..!

❑ **साभार : बेटीक पैरुख**

डभियाएल गाम

आने गाम जकाँ हमरो गाममे पंचायत चुनावक अवाज पहुँचल। लोकक मने उड़ि गेल जे जिला-पार्षद भेल, मुखिया भेल, पंचायत समिति भेल, सरपंच भेल, सरपंचक संग-संग मुखियोक पंच भेल, ओहीमे उपमुखिया आ उप-सरपंच सेहो भेल, तहूमे आरक्षण भेने तँ आरो घरे-घर पद-प्रतिष्ठा सेहो पहुँचत। जखन सभकेँ लड़ै आ पद पबैक अधिकार छै तखन किए ने एके परिवारक सभ बनत। एक गोरे मुखिया, दोसर सरपंच, तेसर पंचायत समिति, चारिम पंच आ जखन सभ अपने हाथ चलि औत तखन जे गाड़ीक-गाड़ीक चाउर-गहुम सरकार दइ छै, अन-पानि उपजबैक खगता की रहत।

दोसर दिस बान्ह-सड़कक कमीशन नगदा-नगदी सेहो एबे करत, तखन किए ने एक धक्का देखिऐ। यएह धक्का मारि धकियबैक मन दर्जनक-दर्जन नेताकेँ एके बेरे ठाढ़ कऽ देलक। जइसँ बुझि पड़ए लगल जे राजनीतक जेना बिर्ड़ो गाममे उठि गेल। मुदा दूरभाग कहियौ आकि अपन भाग कहियौ मरलाही पंचायत जे अखन वीर्तमान अछि, ओइ क्षेत्रक (जमीनी) कियो अखन तक पंचायतिक जे पद-भार होइ छै, से पौने नै छला। तेकर अनेको कारणमे प्रमुख भेल पंचायत क्षेत्रकेँ असथिर रहब। मरलाहीए गाम जकाँ सरलाही, जरलाही, हरलाही इत्यादि बीस

गाम मिला एकटा पंचायत बनल, जइमे ऐ सभ गामकेँ बिना दगने सोनबैरसा पंचायतक नाओं पड़ि गेल।

ओना, जहिना ऐबेर गामे-गाम समाजक विकासक काज केनिहार उठि कऽ ठाढ़ भेल अछि तहिना देशक अजादीक समय सेहो गामक विकासक बात उठल छल। मुदा दुनूक दू परिस्थिति दू मन: स्थिति पैदा केलक। ओइ समय, माने आजादीक समय सबहक मनमे रहैन जे गाममे रहब अछि तँए गामक विकास ओते तँ जरूर भऽ जाए जे रहै-जोकर होइ। मुदा हुनका सबहक संगे आरो विषम स्थिति रहैन। गामक-गाम डभियाएल पड़ल अछि। किसानक देश भारत, जेकर अधार कृषि, जे सालक-साल बाढ़ि-रौदीक चपेटमे पड़ैत रहैए। मुदा बाढ़ि-रौदीक तँ अपन हिसाब छइ। बेसी बरखा भेल तँ बाढ़ि आएल उपज दहा गेल आ रौदी भेल तँ उपज जरि गेल। मुदा दुनूक अपन-अपन बान्हल समय छै, बाँकी तँ बिसवासू समय अछि। तइले किछु ने भेल। किसान आन्दोलनसँ पछिमी कोसी नहर बनैक योजना बनल। मुदा केते खेतकेँ नहैरसँ लाभ होइ छै आ केते उपजाउ खेत मारल गेल? खएर जे भेल से भेल मुदा चुनाव सनक महापर्वकेँ नीक जकाँ सफल करब मरलाही गामक लोकक मनमे जागले अछि। टोले-टोल, जातिये-जाति पंचायत चुनाव लड़ैक क्रममे आबिये गेल अछि। मुदा कोनो उम्मीदवारकेँ मुद्दा नइ भेट रहल छै, जे एक उम्मीदवार दोसरकेँ पछाड़ि केना जीतत। सभ एक रंगाहे एक चलिये...।

आजादीसँ पहिने हजारो बर्खक शासन देशक बाहरी लोकक रहल जइसँ जनतांत्रिक पद्धैतक विचार लोकक मनमे कहियो जगबे ने कएल। बाहरी शासक रहने देश गुलामीक जंजीरमे जकड़ल रहल।

देश स्वतंत्र भेला पछाइत पंचायतिक रूप-रेखा तैयार भेल, जे गामक लोकक माध्यमसँ संचालित हएत। ओना, आजादीसँ पूर्व गामक सीमांकन वित्तीय गामक रूपमे छल, जमीनक मालगुजारियो आ देखो-

भाल जमीन्दारक हाथमे छल।

देश आजाद होइते जमीन्दारोक जमीन्दारी आ रजो-रजवार ढहल। पंचायतक सीमांकान नव सिरासँ भेल। बीस गाम मिला कऽ सोनबैरसा पंचायत सेहो बनल। सभ गाम सभ रंगक अछि, कोनो गाम रकबो आ जनसंख्योक हिसाबसँ नम्हरो अछि आ कोनो छोटो अछि। मुदा जे अछि से अछि पंचायतमे एकटा मुखिया आ एकटा सरपंच तँ बनबे कएल।

किछु दिनक पछाइत किछु गाम कटि कऽ दोसर पंचायतमे गेल, फेर किछु गाम कटि तेसरमे गेल। अखन ओ बीसो गाम पाँच पंचायतमे विभाजित भऽ गेल अछि जइसँ जनसंख्यो आ रकबोक हिसाबसँ पंचायत छोट बनि गेल अछि, मुदा तैयो मरलाही गामक ने एकोटा मुखिया बनल आ ने सरपंच।

ओना, असगरो मरलाही गाम ओहन अछि जे जनसंख्या-हिसाबे पंचायतिक शर्त पूरा केने अछि। जइसँ पैछला सालक सीमांकनमे पंचायत बनियोँ गेल। अखन तक आने-आने गामक मुखियो आ आनो-आन पद आने-आने गामक लोकक हाथमे रहलैन। गाम-घरमे अखनो पंचायतिक शासनक माने लोक चीनी-गहुम-मटिया तेलक कोटा आ गमैया पनचैतीक अलाबा किछु ने बुझैत।

तीन हजार भोँटरक पंचायत मरलाही गाम, ओना धिया-पुता लगा पाँच हजारसँ ऊपरे जनसंख्या छइ। मुदा भोँट देबाक अधिकार अट्ठारह बर्खसँ ऊपर रहने, तीन हजार भोँटर अछि। कहैले दस-एगारह जातिक गाम अछि, मुदा छह-सात जाति ओहन अछि जे एक-घरासँ लऽ कऽ सत-घरा धरि अछि। आरक्षण भेने किछ-ने-किछ सब जातिक हिस्सेदारी पंचायतमे हेबे करत तँए सभ जातिक बीच पंचायतिक जिम्माक उनमुनी तँ आबिये गेल अछि। जे एको घर अछि ओहो कोनो पदक अधिकारी बनियेँ जाएत।

चारि जातिक संख्या कशम-कश अछि, माने पान साएसँ हजार भोँटरक। ओना, अखन तक समाज-संचालनक जे पद्धैत आबि रहल अछि ओ मैनजनी-पद्धैतक अनुकूल अछि। जे जमीन्दारी पद्धैतसँ जुड़ल अछि। मुदा ओ तरे-तर दिवरलग्गु-घुनलग्गु भऽ गेल अछि जेकरा जीब कठिन अछि। मुदा तैयो जाति-धर्म हाबी नइ अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

गामे-गाम कि सौंसे राज्येमे चुनावक घोषणाक संग आचार-संहिता सेहो लगि गेल। नोमीनेशनक तारीख सेहो तँय भेल

अन्हराकेँ महींस बीएला पछाइत जहिना गामक लोक, माने दुहनिहार डाबा सोन्हबए लगैत तहिना पंचायत चुनावक चर्च सुनि गामक लोक सेहो उठि कऽ ठाढ़ भेल। ठाढ़ो केना ने होएत, जनतंत्र छिऐ किने, सभकेँ ने भार सम्हारैक अधिकार अछि। ओना, गामक जे अल्प-संख्यक छैथ हुनका सभकेँ जे आरक्षण भेटलैन तइसँ सभ जातिक, माने पाँचो-छबो जातिक लोक मने-मन संतुष्ट छला। सन्तुष्टक दुनू कारण- पहिल जे एक परिवारसँ उठल दू-चारि समलित परिवारक जे श्रेष्ठ-जन छैथ, हुनकापर सभ सहमत। तेकर बेवहारिक पक्ष ई जे अखन तक परिवार-विभाजनक पछाइतो ओ सिरजन अपन परिवार जकाँ सभकेँ बुझै छैथ। दोसर कारण ईहो जे जैठाम अधिक मतक महत हएत तैठामक महते केते। ऐठाम विपरीत विचार अछि। एक विचार अछि जे एक वैदिक साए अवैदिकसँ श्रेष्ठ, जे बेवहारिक ज्ञानक हिसाबे नीको अछि, जनतंत्रमे मतक विचार भेने अनाड़ी विचारोक महत बढ़ि जाइए। जे हजार जनसंख्याक अछि, ओइमे खुटे-खुट माने दियादे-दियाद पंचायतिक मुखियो, सरपंचो आ पंचायत समितियो लेल ठाढ़ भऽ गेल। जइसँ अठारह-अठारहटा केन्डिडेट मुखियो, सरपंचो आ पंचायत समितियो-पदक लेल ठाढ़ भऽ गेला। ओना, मरलाही गामक आइ धरि ने कियो पंचायत चुनाव लड़ल छल आ ने गाममे राजनीतिक हवा बहल छेलइ।

ओना, एम.एल.ए; एम.पी. चुनावमे सेहो आ पंचायत चुनावमे सेहो भोँट खसबैत जरूर आएल छल मुदा ओकर प्रभाव सीमित छेलइ। सीमित ई जे एम.एल.ए.-एम.पी. चुनाव जाति-धर्मक हिसाबसँ होइ छै तइमे वएह भेल राजनीति आ पंचायितक चुनावक अधार ई भेल जे बीस गामक पंचायत भेने विकास नइ होइए, तँए छोट भेने बेसी हएत, जे पंचायत तीन बेर कटान भेल, वएह अधार बनल रहल जे राजनीति बनल रहल।

ओना, गाममे तेते केन्डिडेट भऽ गेला जे जँ एक-एको छअ कोदारिक माटि उठा कोनो सड़कपर देथिन तँ ओ नीक सड़क बनि जाएत, मुदा से नइ दू दाँतक बच्छा जकाँ सभ हरछुटू, तँए ने ओकरा हर लागएब सिखबैक अछि। मुदा तेहेन ने जातिये-जाति आ खुटे-खुट लड़ाइ ठाढ़ भेल जे पहिने जाति-जातिक बीच फरिया लिअ। मुदा जे भेल से भेल, पैछला सेवाक कोनो अधार कोनो केन्डिडेटकेँ नहि, तँए सभ मोगलक हींग वेपारी जकाँ जे चैतक करारीपर जहिना हींगक वेपार करैए तहिना सभ केन्डिडेट आगूक काज परचारक अधार बनौलक। मुदा एकटा गुण अछि, गुण ई जे सभ पहिल-पहिल जवाब-देहीक विचार रखि रहल छला, किनको पैछला खएल-पीअल अनुभव नहि जे केना कोटाक चाउर-गहुमक आमदनी अछि, आ केना इन्दिरा आवासमे कमीशनक जोगार। केना रोडक कमीशन होइ छै आ केना तरे-तर स्कीम गोल होइए।

सत्तासँ अलग रहल सभ केन्डिडेट, तँए सत्ताकेँ जुआ बुझि किए पाशापर बैसता। मुदा एते तँ सभकेँ बुझले रहैन जे आब जाति-धर्मपर भोँट नइ होइ छै जँ से होइतै तँ एके-जातिमे चारि-चारिटा केन्डिडेट होइत, जाति केकरा भोँट देत? तहिना धर्मोक भऽ गेल अछि एके धर्मक पँच-पँचटा उम्मीदवार भऽ गेला, तइमे किनका नमहर धरमात्मा मानल जाए? समाज-ले तँ अखन तक कियो एकटा माछियो ने रोमलैन अछि! आन-आन गाममे केतौ साए रूपैये भोँट तँ केतौ हजार रूपैये भोँट खरीद-

विकरी होइ छइ। ओना, मरलाही गाममे अखन तक खरीद-बिकरीबला हवो नै आएल छल, तँए जहिना राजनीतिक दृष्टिसँ तहिना खरीद-बिकरीक दृष्टिसँ मरलाही गाम डभियाएले रहल अछि। जाबे ओइमे ताम-कोर नइ हएत, ताबे उपजाउ केना बनत?

देशक स्वतंत्रताक समय गामक विकासक प्रति जे जन-जागरण छल ओ तँ नहि अछि मुदा एते तँ ऐछे जे नव-नव योजना गाम तकक हुअ लगल अछि, जइसँ आर्थिक समृद्धता एबे करत।

पनरह साए बीघाक रकबाबला गाम मरलाही। जहिना उपयोगी जातिक बस्ती, माने समाजक जे जरूरत-मन्द जाति जेना- बरही, नौआ इत्यादि– मरलाही गाम, तहिना चौरीसँ घराड़ी धरिक माटिक बनाबट सेहो। सातटा पोखैर अखनो गाममे ऐछे, जे माल-जाल गाममे नइ रहने आ चापाकल भेने नहाइयो-जोकर नइ रहल, तहिना पानिक उपजा नइ भेने ओहिना लिढ़ियाएल, केचिलियाएल पड़ल अछि। दर्जनो इनार जे कहियो बैशाख-जेठ मास पनिसल्लाक धरमशाला बनल रहै छल ओ आइ अपने ढहि-ढनमना गेल अछि। जे अपन उपयोगी पजेबोकेँ माटि तर गरल देख-देख कानि रहल अछि। माने हजारक-हजार पजेबा माटिक तर दबल अछि। ओना, आठ साए बीघाक जे चौर-चाँचर अछि ओ, ओना, भरोसगर खेत नहियेँ अछि, चपगर जमीन रहने जँ अगते गोटे नमहर बरखा आबि बाढ़ि आएल तँ भरि छाती पानि लगि जाइए, ओना किछु जिबठगर किसान चौरियोमे बोरिंग गड़ा लेलैन अछि, जे सालक छह मास जे खेत सुखैए तइमे एक-दू बेर एहेन जजातिक खेती कऽ लइ छैथ जे बारहो मासक उपज तँ नहि मुदा छह मास तँ जरूर ओइ खेतकेँ उपजाइये लइ छैथ।

ओना, ने कोनो गाम सोल्होअना डभियाएल अछि आ ने सोल्होअना उपजाउ। थोड़-थाड़ जहिना डभियाएल अछि तहिना थोड़-बहुत उपजाउ सेहो तँ अछिए। जहिना आन गाम अछि तहिना ने मरलाही

पंचायत कहियौ कि मरलाही गाम सेहो अछिए। आने गाम जकाँ मरलाहियो गामक लोक, गाममे स्कूल नइ रहने आनो गाम आ आनो ठाम जा-जा पढ़बे करै छैथ। भलें ओ नाम-मात्रे किए ने होइ। तहिना बर-बेमारी भेने आनो गामक डॉक्टर ऐठाम आ दरभंगो-पटनाक अस्पताल जा-जा लोक इलाज करैबते छैथ, भलें ओकर जेहेन परिणाम हौउ। विचारोक तँ दुनियाँ अछि। जँ कियो अपन बाल-बच्चाकेँ समुचित शिक्षा नइ दऽ पेलक वा नइ पेब रहल अछि तँए कि ओकर मनक विचार थोड़े दोखी हएत। जेकरा कपारमे विद्या लिखल रहतै, ओ कहुना-ने-कहुना भइये जेतइ, सभ काञ्चीनाथ किरणे नइ ने हएत जे घसन विद्या आ लपट जोड़सँ दुनूक उपारजन बुझत।

सात साए बीघा जमीन मरलाही गामक ओहन अछि जइमे एगारह साए परिवारक बासो अछि आ जीविका-ले खेतियो तँ अछिए। ओना, ईहो बात सेहो ऐछे जे आने गामबला जकाँ मरलाहियो गामक लोक नोकरी-चाकरी करए पंजाबसँ लऽ कऽ बंगलोर तकमे रहिते छैथ। तैसंग सरकारियो नोकरी करिते छैथ। सभकेँ अपन-अपन जिनगी छैन आ अपन-अपन विचार छैन, जे जेतए छैथ ओ ओतए खुश छैथ।

जहिना सभ गाममे सार्वजनिक काज होइए तहिना मरलाहियो गाम-

मे होइते अछि। सालमे एकबेर दुर्गापूजा आ ब्रह्मस्थानमे नवाह-कीर्तन सेहो होइते अछि। ओना, ई दुनू काज सार्वजनिको होइए आ घरे-घर सेहो होइते अछि। तेतबे किए सालक अनेको पाबैन आ व्रत-उपास सेहो होइते अछि। तैसंग परिवार-परिवारमे मूड़न, बिआह आ श्राद्धो नइ होइए सेहो थोड़े नइ कहल जा सकैए, सेहो तँ होइते अछि। केतबो अपनामे भोज-भात-ले बारा-बारी आकि झगड़ा-झंझट होइए, तँए कि केकरो रान्हल भात सड़ि थोड़े जाइए।

प्रश्न अछि आजुक समेनुकूल विचारक संग समेनुकूल जिनगीक। जइ खेतपर गाम ठाढ़ भेल अछि ओइ खेतक दशा-दिशा की छइ? की गामक लोककेँ उदर-पूर्ति खेतीसँ होइ छै वा आन-आन उपाय करए पड़ै छइ? मनुख तँ भोजनेपर ठाढ़ अछि जे अन्नेसँ पूर्ति हएत आ अन्न औत खेतसँ। तँए दुनियाँक ऐनामे देखैक जरूरत अछि जे गामक जमीन केते उपैज सकैए आ तइले की सभ खगता अछि। जाबे से नइ हएत ताबे गामक खेतीक उन्नैत केना हएत, तहिना जाबे जिनगीक अनुकूल रहैक बेवस्था नइ हएत ताबे जिनगी चलि केना सकैए। कहैले एगारह साए परिवारक गाम छी, मुदा केते परिवारकेँ अपन घराड़ी छै आ रहै-जोकर घर..?

रोग-वियाधिक निराकरण अखनो झार-फूक आ ओझाइसँ होइए, की यएह विचार एकैसमी सदीक मनुखक होय? मुदा डाभियो तँ डाभी छी किने जे एक दिस जहिना खेतक जोत कोड़ नइ भेने स्वत: जनैम खेतकेँ डभियार बना दइए, तहिना दोसर दिस नव-नव ढंगसँ डाभी रोपि-रोपि डभियार सेहो ने बनौल जा रहल अछि, मुदा से बुझत के? पंचायत चुनाव परसू हएत मुदा गाममे जेना तना-तनी बढ़ि गेल अछि ओ चुनाव हुअ देत कि नइ हुअ देत, ई तँ परसूक पछाइत बुझब। मुदा एते तँ गामक लोक सुनियेँ रहला अछि जे जातिक बाधक जाति छी आ धर्मक बाधक धर्म। जँ से नइ तँ मानव जाति आ मानव धर्म की भेल, ई तँ मरलाही गामक लोको ने बुझता।

दस चरणमे पंचायत चुनाव हएत। पहिल चुनावसँ दसम चुनावक दूरी, सबा मास भऽ गेल। पहिल-दोसर चरणक चुनावकेँ प्रचार करैक कमे समय भेटल। ओना, कम समय ओकरो नइ भेटल किए तँ जखन एम.पी.क ओते नमहर क्षेत्रक प्रचार-प्रसार ओतबे दिनमे सम्भव अछि, तखन पंचायत-ले कम समय नइ भेल। जेना-जेना चुनावक चरण बढ़ैत गेल तेना-तेना प्रचार-प्रसारक समय बढ़ैत गेल। मरलाही पंचायतक

चुनाव दसम चरणमे हएत तँए प्रचारक समय खूब भेटल।

परसू सोम छी, चुनावमे भाग लेबा-ले माने भोँट दइले सरकारी छुट्टी भेल। आइ पाँच बजे तक प्रचारक समय अछि। पाँच बजेक पछाइत लॉड-स्पीकरक अवाज एकाएक थमि जाएत। रघुनाथ सेहो शनियेँ दिन आठ बजे रातिमे गाम आबि गेला।

गामसँ पाँच कोस हटि मोहनपुर हाइ स्कूलमे रघुनाथ शिक्षक छैथ। आठ बजे गाम पहुँचला पछाइत अपन पितियौत भाए- सुजीतकेँ सोर पाड़लैन। ओना, सुजीतोकेँ बुझल जे सभ शनिकेँ रघुनाथ भैया गाम अबै छैथ। अबिते सोर पाड़ि गामक हाल-चाल पुछिते छैथ। अबिते सुजीत रघुनाथकेँ गोड़ लगि बाजल»

“भैया, भोँट की हएत जे गाममे बड़का झंझट ठाढ़ भऽ जाएत।”

सुजीतक बात सुनि रघुनाथ तारतम करए लगला जे पंचायतिक गठन कल्याण-ले भेल अछि, तैठाम सुजीत बुझैए जे बड़का झंझट ठाढ़ हएत। ओना, सुजीत हाइये स्कूल तक पढ़ने, मुदा कौलेज तकक शिक्षा होइ आकि स्कूलक आकि नहियेँ होइ, मुदा सभकेँ तँ अपन-अपन बुधिक अनुकूल विचारो होइ छै आ देखैक अपन नजैर सेहो तँ होइते छइ। बजला- “बौआ, की झंझट ठाढ़ हएत?”

जहिना कोनो विद्यार्थीकेँ पढ़ल प्रश्न भेटने परीक्षा भवनमे मन खुशी होइ छै तहिना बुझले बात सुनि सुजीतक मन सेहो खुशी भेल। खुशी होइते सुजीत मने-मन विचार करए लगल जे भैयाक प्रश्न एकेटा ने छैन, मुदा हमरा तँ अनेको उत्तर बुझल अछि। मुदा अनेको बुझल बात मे ई तँ समस्या ऐछे जे अपन पसन्दक उत्तर जे रहत आ ओ जँ प्रश्नकर्ताकेँ ओते रूचिगर नइ लगैतन जेते उत्तरकर्ताकेँ लगैए, तखन।

मुदा संयोग नीक बैसल, तखने चाह नेने रघुनाथक दस बर्खक बेटी–रूकमिणी–पहुँचल। चाह देखते हाँइ-हाँइ सुजीत अपन मनक बात-

विचारकेँ समटैत अकछाइत बाजल»

“भैया, कोनो कि एकेटा कारण अछि, अहाँ तँ गाममे नइ रहै छी तँ की बुझबै, मुदा सुनैत-सुनैत हमर कान बहीर भऽ गेल अछि, तँए कहलौं।”

सुजीतक सुढियाएल मन देख रघुनाथ बजला»

“अच्छा, गप-सप्प हेबे करत पहिने चाह पिबह।”

एक तँ ओहिना सुजीतक मन बजैले तनफनाइत तैपर भफाएल चाह देख मनो भफाएल। बाजल»

“पहिने अहाँ पीब तखन ने हम पीब।”

सुजीतक सुविचार देख रघुनाथक मन पघिल गेलैन। पघिल ई गेलैन जे जे विचार अखनो समाजमे जीवित अछि- माने पहिने अहाँ तखन हम- ओ मरि जाए, सेहो नीक नहि। मुदा काल्हिये भरि दिन समय अछि, एकबेर जँ सभ उम्मीदवारकेँ एकठाम बैसा एक विचारमे आनि समाजक उन्नतिक दिशा दिस बढ़ब नीक हएत। मुदा से सम्भव कहाँ अछि। जिनकेसँ भेँट करए जाएब वएह बजता जे झगड़ा करैबेर जहिना धरहरिया केकरो पकैड़ मारि खुआ दइए, सएह ने बुझत। आब देखौआसँ चोरौआ धरि सभ अपन-अपन मैनेज करैमे लागत, तइमे जँ हम किछु केकरो कहबै तँ सएह बुझत..।

रघुनाथक मन ठमैक गेलैन। मुदा लगले भेलैन जे रोगसँ बँचैक दुनू उपाय अछि। बेमारी होइसँ पहिने संजम आ बेमारीक पछाइत नीक इलाज। तँए जेते चिन्तनीय समस्या बुझै छी, से नइ अछि। मुदा अही समाजक तँ अपनो छी किने तँए किछु दायित्व तँ बनिते अछि।

चाह पीब रघुनाथ बजला»

“बौआ, गाममे तँ हमहींटा हाइ-स्कूलक शिक्षक छी, तूँ कहै छह जे गाममे झंझट ठाढ़ हएत, तैबीच हम की करी?”

सुजीत बाजल»

“आब अरवन किछ ने करू, मन हुअए तँ भोंट खसाएब नइ हुअए तँ नइ खसाएब, किए केकरोसँ अहूँ दुश्मनी करब।”

सुजीतक विचार सुनि रघुनाथक मन मानि गेलैन जे अरवन सबहक मनक चढ़न्त बेर अछि तँए चुपे रहब नीक। बजला»

“से सएह?”

सुजीत»

“हँ ते और की।”

❑ **साभार : डभियाएल गाम**

अखरा-दोखरा

देवघरसँ अबैत रही, जसीडीहक मुसाफिर खानामे एक गोरे भेटला। भेटला कि सिमटीक जे कुरसी बनल छल ओइपर पहिनेसँ असगरे बैसल रही, ऊहो आबि कऽ बैसला। कनीकाल तँ ऊहो चुपे रहला आ हमहूँ चुपे रहलौं मुदा जखन चुनौटी निकालि तमाकुल चुनबैक सुर-सार केलौं आकि बजला-

“एक जुम बढ़ा देबइ।”

पहिल दिनक भेँट, केना कऽ पुछितिऐन जे छोट जुम खाइ छी आकि नमहर। अपने अनुमान करए लगलौं जे मुँहक एकोटा दाँत नै टुटल देखै छिऐन तइसँ भरिसक छोटे जुम खाइत हेता। सएह करैक मन भेल, मुदा खुएला पछाइत जँ अजश भेल तखन खुएलहा फले की हएत!

तँए अहगरसँ तँ नै मुदा मझोलका घानी लगा देलिऐ। तरहत्थीपर औंठा चलए लगल। धिया-पुताक खेल जहानि एतए-सँ चलिहेँ बुढ़िया, धोकड़ी समैइहेँ बुढ़िया...। बाँहिपर ओंगरी चलए लगल।

घन्टा भरि गाड़ी पछुआएल। भरिपोख दुनू गोरेक बीच गपो-सप्प भेल आ दूबेर चाहो-पान चलल। गाड़ीक एके कोठलीमे बैस कऽ भरि रस्ता गप-सप्प करैत एलौं। दरभंगा अबैक रहए। हायाघाटमे जखन ओ

उतरए लगला तँ कहलैन- “फेर कहिया भेँट-घाँट हएब आकि नै हएब।”

हमहूँ टोकारा देलिऐन-

“ऐ देहक कोनो ठेकान अछि, अखने डिब्बासँ खसि पड़ब, परान तियागि देब।”

हठ करि कऽ अपना संग उतारि लेलैन। दू दिन पहुनाइ चलल। दू दिनक पछाइत जखन गाम एलौं तँ बेटा पुछलक-

“दू दिन केतए हराएल छेलौं?”

जेना-जेना भेल, सभ बात सुना देलिऐ। सुनि कऽ बाजल-

“एना जे अखरा-दोखरा-तेखरा दोस्ती हुअ लगल तँ दुनियेँ अछन भऽ जाएत।”

जहिना गबैया, खिस्सकर शुरू कम स्वरमे करैए तहिना बेटो मुँह दाबि कऽ बाजल छल। दोखरा-तेखरा तँ नीक जकाँ सुनलौं मुदा अखरा कहलक आकि सखरा से नीक जकाँ सुनबे ने केलौं।

मनमे उठल दोखरा बालु तँ पाइनो बनबैए आ हवो मुदा तेखरा तँ पाथरेटा बनबैए। ओ चाहे कोइला कहबए आकि पाथर मुदा दुनूक (बालु-सिमटी) प्रेम केते प्रगाढ़ होइए जे जुग-जुगान्तर के कहए जे जन्म-जन्मान्तर धरि ओहिना ठाढ़ रहैए जहिना शुरूमे ठाढ़ होइए।

ओना, बेसी थकान नै रहए हायेघाटसँ आएल रही, मुदा पाछू पुछड़ी जोड़ि बजलौं- “बौआ, थाकैनसँ देह भरियाएल अछि, पहिने नहा-खा कऽ किछु समय आराम करब तखन मन खनहन हएत। पछाइत सविस्तर बात करबह।”

थकान सुनि बेटा अपन जवाबदेही बुझि गुमे रहि गेल।

❑ **साभार : पतझाड़**

गाछपर सँ खसला

ओछाइनेपर रही, माने नीनसँ सूतल रही। ओना, किरिण नइ फुटल रहै मुदा गामक लोक जगि गेल रहै, पोसर चरौनिहार महींसवार बाधसँ घुमि गेल रहए, गाछीक अखड़ाहापर कुश्ती समाप्त भऽ गेल रहै, मुदा चलती बेरक सवारी कसा-कसी होइते रहइ। पत्नियोँ आँगन-घर बहारि चुल्हि नीपैक सुर-सार करिते रहैथ कि पड़ोसिनी आबि कहलकैन»

“मनोज बाबा गाछपर सँ खैस पड़ला!”

कहि पुछाड़ि-भाड़क बेन जकाँ आगू बिल्हए बढ़ि गेली।

‘गाछपर सँ खसब’ सुनि जे पत्नी अवाक भेली से पड़ोसिनी परोछ भऽ गेलैन मुदा बकार नइ फुटलैन जे कनी आरो सेरिया कऽ बुझितैथ। घर-निप्पा चुल्हि लग रखि पत्नी सोझे लगमे आबि बजली»

“मनोज बाबा गाछपर सँ खैस पड़ला!”

ओना पहिनहि जगा देने छेली। जगला पछाइत कहलैन। मनोज बाबाकेँ गाछपर सँ खसब सुनि मनमे उड़ी-बीड़ी उठि गेल। मुदा तखन तँ पत्नियेँ सोझमे रहैथ, आन रहितैथ तँ आनो मने बाजल जा सकैए मुदा पत्नी लग से केना हएत। पति जकाँ ने बाजए पड़त। की करितौं सहए केलौं। तमसा कऽ तँ नइ मुदा गरमा कऽ बजलौं»

“कुकुर कटने छेलैन जे भोरे-भोर गाछपर चढ़ि गेला।”

ओना कहब जे अठबजिया ओछाइन छोड़निहारकेँ अहिना भकइजोते होइत रहै छै से बात नइ, छअ बजेसँ पहिनेक बात छी। उठै बेर हमरो भऽ गेल रहए मुदा उठल नइ रही। मनक खौंझक कारक दोसरो भेल। दोसर भेल जे जखन गाछेपर सँ खसला तखन केते जखम भेल हेतैन तेकर कोन ठेकान। तइमे तेलेक मालिशसँ नीक भऽ जेता आकि डॉक्टर ऐठाम जए पड़तैन आकि अक्सीजन-घर पहुँचबए पड़तैन, तेकर कोन ठीक अछि। तइले तँ तैयार भऽ कऽ ने निकलए पड़त, से तँ अखन ओछाइने छोड़लौं अछि। अखन नित्य-कर्मक संग पाइयो-कौड़ीक बेंत-बाँत ने करए पड़त। तहूमे जखन डॉक्टरे-इलाजक भाँजमे पड़ब तखन केते दिन लागत आ की सभ करए पड़त तेकरो की थाह अछि। अथाहक भरोसे केते...।

मुदा फेर भेल जे सोझे मने-मन नक्शे-खतियान बनबैत रहब तहूसँ तँ नहियेँ हएत। कोसी-नहैर जकाँ मने-मन नक्शा बना लेब आ खुनैकाल ई ठेकाने ने रहत जे पानिक बहान ऊपर-सँ-निच्चाँ दिस दौड़ैए, तैठाम जँ मुहेँपर निच्चाँ उतारि देबै आ आगूमे ऊँचका खेत रहतै तखन ओइ खेतकेँ पटैक केते आशा कएल जाएत, ई तँ इंजीनियरक काज भेल, सबहक तँ छी नइ। तहूमे अपन नक्शा-खतियान तँ अखन यहए ने हएत जे मुहसँ पत्नीकेँ घरक भार सुमझबैत, अपने मुँह-कानमे पानि लऽ ली आ जेते जल्दी बाबा लग पहुँच सकब ओते मुस्तैदी करी। जानक कोनो ठेकान अछि जे परान छुटि जाएत आकि...। चाह पीब विदा भेलौं। थोड़बे हटि कऽ टोलेमे दछिनवारी कात घर छैन। मनोज बाबा दरबज्जेपर भेटला। ओना गामक लोकक देखब पतरा गेल रहै मुदा गोटि-पँगरा आबा-जाही रहबे करइ।

गामक बातावरणमे पसैर गेल रहै जे फुलेक गाछपर सँ खसला, फुलडाली नेनहि ठाढ़े खसला।

पुछलयैन»

“बाबा, किछु विशेष समाचार?”

अपने तँ लाभर-जीभर बजलौं मुदा सियारवी बाबा नीक जकाँ बुझि गेला। जएह बात गामक वातावरणमे पसरल तही टोनमे मनोज बाबा बजला»

“आने दिन जकाँ अपन नियमसँ फूलक बेर फूल तोड़ए गेलौं। कनैल फुलक फड़ी क मास छीहे सएह ठिकिया कऽ चढ़लौं, थोड़बे ऊपर गेलौं कि पएर पीछैड़ गेल, हाथमे फुलडाली लटकौनहि निच्चाँ-मुहेँ ससरैत ठाढ़े खसलौं।”

गपक आभाससँ बुझि पड़ल जे बाबा अपन बेथाकेँ छिपा कऽ बाजि रहला अछि जँ से नइ अछि तँ बोलीमे किए अवरोध भऽ रहल छैन।

मुदा अपनो तँ हुनके बेथा मेटबैले ने जिज्ञासा करए आएल छी, तखन जँ जोतले-चौकियाएल खेत भेट गेल तँ बीये छिटैमे किए देरी करब।

कहलयैन»

“फुलडाली मजगूत छल किने?”

ओना बाबा बोली परेख लेलैन, मुदा बाउक भाउ जेना दुनू अछि- पितोकेँ आ पुत्रकेँ सेहो ‘बाउ’ कहल जाइ छै, तहिना मुस्की दैत बजला»

“एह! फुलडाली तँ फुलडालीए अछि, ओना छी पितरिया मुदा रंग- रूपसँ सोने जकाँ झलकैए।”

घन्टा भरि पहिलुका चोटपर मनोज बाबा केतबो झाँपन दैथ तैयो ओछ धोती-साड़ी जकाँ एक-भाग उघारे भऽ जाइन। अपनो मन गवाही दिअए- भाय! कियो कनबैत-कनबैत हँसबैए, कियो हँसबैत-हँसबैत कनबैए, मुदा जीवन-धार तँ से नइ छी, ई तँ हँसैत-खेलैत बहैत धारा छी। तैठाम मनोज बाबा अपने जे नुका रहला अछि तखन कनी किए ने एकटा

ओढ़ना आरो ओढ़ा दिऐन। सहए करैत पुछलयैन»

“बाबा, साँप जकाँ जे गाछपर सँ ससैर कऽ निच्चाँमे उतैर ठाढ़े रहलिऐ, एकर तँ कोनो मानैयेँ ने भेल?”

पारखी मनोज बाबा धाँइ-दे बात परेख लेलैन। बजला»

“बेसी-सँ-बेसी तूँ यएह ने कहबह जे गाछपर सँ साँपे ससैर कऽ निच्चाँ अबैए आकि गनगुआरिये?”

बिच्चेमे बजा गेल»

“हँ, एकटा टाँगक झोंझबला आ दोसर बिनु टाँगबला।”

बातकेँ सम्हारि बाबा बजला»

“थोड़बे ऊपर चढ़ल रही, जेते ऊपरसँ धिया-पुतामे कुदनाइ सीखने रही तँए ससरलौं नइ पीछड़ए लगलौं आकि कुदि गेलौं।”

‘कुदब’ सुनि चपाड़ा भरैत कहलयैन»

“अपने कहुना भेलिऐ ते पुरान हाड़-काठक ने भेलिऐ, मुदा हड्डीक जोड़क जे पएरमे छिटकिल्ली अछि ओ ने ते ससरल।”

एकेबेर नीपैत-पोतैत बाबा बजला»

“यएह बुझह जे जहिना पहिने फ्रेश रही तहिना अखनो छी।”

कहलयैन»

“बाबा, जखन पूजा करै छी, फूलक जरूरत होइए तखन एहेन-एहेन जे बड़का फूलक गाछ लगौने छी, जैपर चढ़ि कऽ तोड़ए पड़ैए तइसँ नीक ने जे फुलवाड़ी लगा छोट-छोट गाछक फूलसँ बेगरता सम्हारि लेब।”

ई बात जेना मनोज बाबाकेँ मनमे गड़ि गेलैन तहिना तिलमिलाइत बजला»

“बौआ, तोरासँ लाथ की करब। साठि बर्खक उमेर भऽ गेल,

चालीस बरख सँ पूजा करै छी, जखन जुआनी छल आ घरसँ खेत धरि कर्मभूमि बनौने छेलौं, सभ किछु सोझेमे नचै छल, आब ओ हूबा अछि जे ओते मनसूबा करब, मुदा... ।”

हरमुनियाँक अन्तिम पटरी जकाँ अवाज बदलैत रहैन मुदा केकरा कहथीन आ कहने हेतैन की तँए ऐठाम आबि बाबाक बोली पलटैत रहैन।

मनमे भेल जे ई तँ केकर दिनक परि भऽ गेल, जे गेलौं करहर उखाड़ए आ आगूमे चलि आएल केशोर! माने भेल जे करहरो आ केशौरो पनिगर माटिमे होइए, मुदा होइए दुनू दू परिस्थितिमे। जखन पानि रहै छै तखन करहर होइए आ जखन पानि सुखि माटि सकताइए तखन केशौर होइए जे हाथसँ नइ खुरपीसँ उखाड़ल जाइए, तइले खुरपीक प्रयोजन पड़ै छइ। ऐठाम सएह भऽ गेल, मनसूबा बना आएल छेलौं जे बाबाक कुशल-छेमक पछाइत, चाहे साइकिलेसँ आकि टेम्पूएसँ डॉक्टर ऐठाम जाएब, दादीकेँ सेहो संग कऽ लेब, बर-बेमारीमे पत्नियेँ ने अर्द्धांगिनी बनि आधा दुख बँटतैन। मुदा से तँ बाबा गाछ परहक खसब बिसैर अपन जिनगीक खसब दिस बढ़ि रहला अछि..!

पुछलयैन»

“की कर्मभूमि कहलिऐ बाबा?”

एक तँ ओहिना बैसारी मनोज बाबा, भरि दिन विचारेक परसादी बँटिते रहै छैथ, तैपर कर्मभूमि सन शब्द भेट गेलैन, भेटते जेना मनसूबा जगलैन। बजला»

“बौआ, यएह देह छी जे हट्ठामे बैशाख-जेठ मास सन दिनमे हर-बरदक संग बारह बजे तक कोदरबाहि करै छेलौं मुदा थाकैनसँ मिसियो भरि मुँहो मलिन नइ होइ छल, जइक चलैत घर-अँगनासँ लऽ कऽ खेतो-पथार धरि हँसैत रहै छल मुदा आइ..!”

‘आइ’क पछाइत सभ कानि रहल छी, से मुहेँमे रहि गेलैन।

बाबाक बन्न होइत बकार देख अपनो बकार बन्न हुअ लगल। मुदा संजोग नीक रहल। दादी सेहो लगमे आबि गेली। जहिना बाल-बोधकेँ अगुआ पुतोहु वा परपुतोहु अपन जेठजन केँ अपन समाद पठबै छैथ तहिना समदिया भेट गेल। मुदा दादी-आगू बाबाकेँ अपन बेथा व्यक्त कराएब मन नइ मानलक। ओना लग्गासँ मरखाहो मालकेँ घास खुऔल जाइए से तँ मनमे रहबे करए। बजलौं»

“बाबा, अखनो अहाँक जे हड़गर-कठगर देह अछि ओ जुआनी-जवानीमे केहेन रहल हएत।”

पत्नीकेँ आगूमे देख आकि की से तँ बाबा जानैथ मुदा बुझि पड़ल जे बाँहिक कुरता समेट-समेट गट्टासँ बाँहि दिस लऽ जा रहला अछि। ओना नजैर पत्नीपर नइ हमरेपर रहैन, बजला»

“बौआ, कर्मभूमियेँ धर्मभूमियोँ छी जे सातो दुनियाँमे अछि। चाहे ओ भावभूमिक कर्मभूमि हुअए आकि जन्म भेल जगहकेँ जन्मभूमि-मातृभमि कहि कर्मभूमि बुझियौ.., अहिना सभ माने- सातो दुनियाँमे अछि, आ सभ दुनियाँक अपन कर्मभूमियोँ छै आ मर्मभूमियोँ छइ।”

अपना झोंकमे बाबा बजैत रहला, बजैत रहला जे सून-अनसून दुनू हुअ लगल। तँए नीक जकाँ बाबाक बात नइ बुझि पाबी। मुदा गुरु ने एक भेला, चेलाक कोन ठेकान अछि। एको भऽ सकैए, एकसँ बेसी दोसरो-तेसरो भऽ सकैए आ एकोमे उत्थरसँ गहींरगर भऽ सकैए। बजलौं»

“बाबा, एक दिनक बेरा पार करैमे जे एना लाख कोसक रस्ता देखए लगबै तहूसँ तँ काज नहियेँ चलत। जरूरत तँ एतबे ने अछि जे काल्हि जे कौल्हुका सूर्जक उदए हएत ओ सीमा भेल आ अस्त धरिक कर्म आ कर्मक सीमा- जिनगी भेल। तेतबे जँ ठेकानसँ ठेकाइन ठेकनबैत चली सएह ने?”

ओना दादी अखैन तक ठाढ़े छेली, मुदा कड़चीक साँगह परक

लत्ती जहिना हवामे डोलैत रहैए तहिना दादीक देह अखनो तक डोलिये रहल छेलैन। डोलबो केना ने करितैन, बेटा-पुतोहुक कोनो अशे ने छैन, लऽ दऽ कऽ साठि बर्खक खाली पतिक छैन, सेहो भोरे-भोर तेहेन अन्हरगरेमे गाछपर सँ खसला जे अन्हरगरे केना चलि जइतैथ, तेकर कोनो ठीक छेलैन। जँ बाबाक पेटे-पाँजर टुटि गेल रहितैन तँ दादीक गति की होइतैन...। मनमे भेल जे अछैते बेटा-पुतोहु कष्टमे किए छैथ? दादीकेँ पुछलयैन»

"दादी, अछैते बेटा-पुतोहु जे एना कष्टमे छी से नीक लगैए?"

हमर बात सुनिते दादी तँ सहैम गेली मुदा मनोज बाबाक मनक फुनफुनी ओहिना जगलैन जहिना रणभूमिमे रणाकेँ जगैए। बजला»

"बौआ, जइ पुरुखकेँ आइन-अपगराइन नइ अछि, ओहो कोनो पुरुखे भेल।"

बाबाक मजगूत विचार सुनि मनमे भेल जे भरिसक मनमे कोनो दमगर व्रत छैन, जे पुरबै पाछू अपन सभ किछु बलिदान करैले तैयार छैथ। मुदा से तँ सुनला पछाइते ने बुझब। ओना मनोज बाबाक परिवारक सभ भाँजो तँ नइ भाँजल अछि मुदा दुनू बापूतक बीचक बात नइ बुझल अछि सेहो तँ नहियेँ अछि। कहब जे जखन बुझले अछि तखन सएह ने किए कहलयैन। समाजक बीचमे ने बसल छी, समाजक बीच बहुत एहेन बातो आ काजो अछि जे सीमाबद्ध अछि। जे सीमाबद्ध अछि ओकर अतिक्रमणो तँ अतक्रमणे भेल, तँए। बजलौं»

"बाबा, अहाँ ते तेहेन उमकीमे उमैक कऽ बाजि देलिऐ जे बुझबे ने केलौं?"

बाबाकेँ जेना सह भेटलैन, मुदा दादीकेँ कठाइन लगलैन से ठोरक बिजकीसँ बुझि पड़ल, मुदा बातो-विचारक तँ अपन क्रम होइ छै, ई तँ नइ जे आमक गाछे रोपैकाल चूरा कीन कऽ लऽ आनी जे आम सेने

खाएब। एक तँ परिवारक विवाद छी तहूमे बाप-बेटाक बीचक जे करवनो नाहपर गाड़ी जकाँ आ करवनो गाड़ीपर नाह जकाँ चलि अपन जिनगीक बाट-घाट पार होइए। तेहेन विवादकेँ तँ, जहिना गोहि अपन मुँह खोलैत-खोलैत शिकार लग पहुँच पकड़ैए, तहिना करब ने जरूरी अछि।

मनोज बाबा बजला»

“तोहीं कहह जे बेटाक ई उचित भेल जे कोन-कहाँ देशमे जा कऽ बिआह कऽ लेलक।”

ओना किछु लोकमे एहेन बजैक आदत होइए जे अपन विचारक बातकेँ टुकड़ी-पुरजी बना, एक-एकटा कहैत बीचमे पुछैत रहत जे की हेबा चाही। मुदा नीक अधला दुनू पक्ष अछि, से सभ बात बुझला पछाइते ने कियो उचित निर्णायक मोड़पर आबि सकैए। तैबीच जे टुकड़ी-टुकड़ीक निर्णय कऽ नेने रहब तखन तँ अपने निर्णये ओझरा जाएत तँए बजलौं»

“बाबा, अपने कनीकाल मुँह बन्न रखियौ, दादियो कोनो ऐसँ फराक नहियेँ छैथ तँए हिनको बाजए दियौन।”

जेना हमर बात बाबाकेँ काँट जकाँ मनमे गड़लैन तहिना बिसबिसाइत दुनू ठोर बिदकलैन। ओना मुँह बन्न केने रहैथ। भऽ सकैए जे मनमे ईहो आबि गेल होइन जे तीन गोरेमे एक बजनिहार दू सुननिहार ने होइए, तैठाम बिनु सुननिहारक बाजबे की हएत। ओना, दादीक मनमे अपन बेटा-पुतोहुक सिनेह अखनो मनक धारे-धार चलिये आबि रहल छेलैन, तैठाम समाजक रूपमे हमरा देख आरो गतिमान भऽ गेलैन जे आक्रोशित होइत बजली»

“सोल्हैनी दोख हिनके छैन!”

दादीक बात सुनिते बाबाक नरसिंह तेज भेलैन, जे मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल। मनमे भेल जे कहीं दादीपर हाथ ने उठि जाइन। मुदा तइसँ

पहिने बीचक जे समय अछि जँ ओकरा अनुकूल बना लेब, तरवन रूप बदैल सकैए।

दादीपर सँ नजैर हटा बाबाक आँखिपर गाड़लौं। जहिना गहुमन साँप आकि बाध-सिंह आँखि-पर-आँखि पड़िते ठकुआ जाइए तहिना भेल। मनोज बाबा ठकुएला। बजलौं»

“दादी, जड़िसँ कहियौ।”

‘जड़ि’ सुनिते मनोज बाबाक मन पिनपिनेलैन। मुदा तैपर दादी मिसियो भरि धियान नइ दऽ बाजए लगली»

“बौआ, तोरो बुझल हेतह आ गामोक लोककेँ बुझल छैन जे एकटा बेटा अछि। कौलेजसँ पढ़ि नोकरी करए कलकत्ता गेल। ओइठाम बिआह कऽ लेलक।”

बिच्चेमे टोनि देलिऐन»

“हँ, ओ तँ अहाँ दुनू बेकतीक बड़का भार उतारि देलक किने।”

बजैले दादी लुसफुसाइते रहैथ कि बीचेमे मनोज बाबा बजला»

“गामसँ जाइकाल बेटाकेँ एना बुझा कऽ कहलिऐ जे बौआ, कामरूप कहाँ-दन ओम्हरे छै, जैठाम पुरुखकेँ जहुरी मौगी सभ गदहा-घोड़ा बना बाधमे चरैले ठोकि दइ छै, तइ सभपर नजैर रखिहह।”

बाबा तेना टोनमे बजला जे हँसी लगि गेल, हँसए लगलौं जइमे बाबाक बातो उधिया गेलैन। बिच्चेमे दादी फेर बाजए लगली»

“बौआ, जहिना अपना सबहक गाम-घरक लोक अछि तहिना कनियाँक छीछा-बीछा सेहो छैन, तरवन बीचमे कोन काँट अछि जे बुड़हाक आाँखिमे गड़ि गेलैन जे कहलखिन- जाबे जीब ताबे तोहर ने कमाइ खेबौ आ ने मुँह देखबौ।”

एकाएक मनक विचारमे उलट-फेर हुअ लगल मुदा जइ परिवारक

समस्या छी ओ परिवार केना समस्याकैं बुझि रहला अछि ओ ने... ।

बजलौं»

“बेटा की उत्तर देलकैन?”

बेटाक पक्षमे दादी उत्तेजित होइत बजली»

“बेटो ते कहिये कऽ गेल छैन जे- भेले जाइ छी ।”

❑ साभार : गाछपर सँ खसला

सोनाक सुइत

जेना-जेना सुचित्राक बिआहक दिन लगिचाएल जाइ तेना-तेना निर्मला काकीक मनमे धएल विचारक टनकक टहकी सेहो बढ़ए लगलैन। जहिना गुड़ घाक टनक रसे-रसे रसिआ शरीरमे टहकी बढ़ा दइए, जेकरा खिल रूपमे निकालला पछाइत टनको कमैए आ धाओ छूटबाक आशा जगबैए, तहिना निर्मला काकीक मनक टहकी सेहो बढ़ि कऽ निकलैक मोड़पर आबि मन कबुल लेलकैन जे अनेरे मनक बात मनमे सड़बै छी, एकरा निकालबे नीक।

करियाएल मने निर्मला काकी बेटीक मनोरथक आशा निकालि निराल-निराश होइत अपन हृदैक हारिक संग मनक हारि कबुल करैत सुचित्राकेँ बुझबैत बजली-

“बुच्ची, तूँ बेटी छिअ। मनक बात तोरा नै कहबऽ तँ केकरा कहब। तहूमे तोरे धनक क्षय भेल अछि। किछु छिअ तँ कोखिक सन्तान तँ तोहीं छिअ। पुश्तैनी सोनाक सुइत..?”

सोनाक सुइत तँ निर्मला काकीक मुहसँ निकैल गेलैन मुदा धसनाक तर पड़िते कोनो धार जहिना रूकि जाइ छै तहिना निर्मलो काकीकेँ भेलैन। अनायास मुँहक बोल ठमैक कऽ रूकि गेलैन।

माइक अधखिजू बात सुनि सुचित्राक मनमे उठल जे चाउर कुटैकाल धानो अधखिजू होइए, मुदा एहनो तँ होइते छै जे अधखिजुओ मारिक चोट नीजा जीवनो-जान लऽ लइ छइ। आखिर माइक मनमे कोन एहेन आँकर-पाथर पड़ि गेलैन जे कण्ठसँ ऊपर बकार नै आबि रहल छैन।

पताएल आगिकेँ जहिना खोरनीसँ खोड़िते जीताएल आगि ऊपर चैल अबैत तहिना खोड़ैत सुचित्रा बाजल-

“माए, मनक वौस आ हृदैक ऋृषा दुनू दू सीमानक भीतर रहैए, छातीक दूध पीअल सन्तान हम छियौ, तखन लाथ किए करै छेँ। जखने गरीब माए-बापक घर कियो जन्म लइए तखने छाती मुक्का मारि बुझैए जे जिनगी भरि कजराएल आँखिक नोरक धार बहबे करत, तइले चिन्ते की? साँझे जेकर मृत्यु भेल तेकराले की लोक भरि राति कनिते रहत। बाज माए, बाजि कऽ हमरो बाजूगर बना दे। बाज माए बाज, तूँ माए छँह, तोरा नै कहबौ तँ अनका कहनौं की हएत।”

अपन हृदैक धाराक धार बेटीक हृदैमे ओहिना प्रवाहित होइत देख निर्मला काकीक मन धिक्कारि देलकैन। धिक्कारि ई देलकैन जे अपन मनक बातकेँ मनमे मारि राखब नीक नहि। कुसमयमे भलेँ ओ मटियामेट धुरा बनि पैरक तर किए ने रहए, मुदा इतिहास ने केकरो बिसरल आ ने बिसरत। ओ तेतबे धरि बिसराएल अछि जेते तक जन्मदाता विहीन अछि। जखने खोजी खोजए निकलै छै तखने खज-खजाना भेटते छइ। विशाल खजाना मटियामेट भऽ नुकाएल अछि...।

निर्मला काकीक विचार मोड़ लेलकैन। मोड़ लइते उठलैन हमरा तँ ओहेन माए ने बनक चाही जे भुखाएल बच्चाक भूख बुझि कनै वा बजैसँ पहिने खेनाइ दऽ दिऐ।

जहिना चिड़ै-चुनमुनी लोलमे लोल सटा बोलो आ घोलो घोरैए

तहिना घोरैत निर्मला काकी बजली-

"बुच्ची, तोराले सोनाक सुइत एकटा रखने छेलौं, बिआहक दिन माए देने छल। मुदा... ।"

माइक अधखड़ू बोल सुनि सुचित्रा बाजल-

"बाज माए, पुरा करि कऽ बाज।"

सुचित्राक मनक झमार तेना निर्मला काकीकेँ झमारि देलकैन जे झूर-झमान होइत बजली-

"बेटी, बकार नै फुटैए। तोरा देख-देख आरो मन कलहन्तमे पड़ि लाजे कठुआ मन कँपैए।"

निर्मला काकीक बात सुनि सुचित्राकेँ सुनैक जिज्ञासा आरो बढ़ल। दोहरी झमार दैत बाजल-

"माए, तूँ जननी छीएँ, किए जनितो अन्जनी बनए चाहै छेँ। जहिना अपन देहक सभ किछु दऽ ठाढ़ केलेँ तहिना अपन मनक बात सेहो मथि कऽ किए ने खुआबए चाहै छेँ। जनाएबे ने जननीत्व भेल।"

सुचित्राक आँखिमे आँखि गाड़ि निर्मला काकी बेटीक लीलकेँ कलील करैत बजली-

"सुचित्रा, जे बूझल-जानल अछि से सुनि लएह। माए कहने रहए जे ई सुइत हमरो माइए देने छल। जेकरा जोगा कऽ तोराले रखने छेलिअ। मुदा बिच्चेमे तेहेन भुमकम भेल जे विरहा गेल।"

सोनाक सुइत विरहाएब सुनि सुचित्रा ठमैक गेल। ठमैक ई गेल जे एक तँ बिआहक बात पक्का भऽ गेल अछि, तैबीच सोनाक सुइतक गप अछि। किछु बाजब माइक माथपर बोझ देब हएत। बी.ए. पास सुचित्रा ओहेन नै जे घरसँ बाहरक कौलेजमे हजारो रूपैआ महिना खर्च कऽ पढ़लक, ओहेन सुचित्रा जे गामसँ पाँच किलोमीटर पएरे चैल गमैआ

कौलेजमे पढ़ने छल। पढ़ने छल समाजशास्त्र आ समाजशास्त्रक अर्थशास्त्र आ अर्थशास्त्रक इतिहास। निष्कलंक, निष्कपट सुचित्राक मन अपन कौलेजमे पढ़ल विषयमे पहुँचल। केना समाजक ढाँचाक संग लूट-पाट भेल, केना अर्थक लूट-पाट भेल आ केना इतिहास लूटाएल। मुदा प्रश्न नान्हिटा नहि। सुचित्राक मन ठमैक कऽ ठहैर गेल। कोन जरूरी वेचारीकेँ छेलै जे समाजक ढाँचाकेँ तोड़ि-मरोड़ि बुधियार अपन भोग-विलास केलक? कोन जरूरी छै जे केना छोट वेपारीकेँ, माछ जकाँ बड़का वेपारी ढप-ढप गिड़ैए। कोन जरूरी छै जे समाजकेँ शराबी, जुआरी, अपराधी बना समाजक नक्शे विगाड़ि दी..?

विचारक दुनियाँमे अपना मनकेँ हेराएल-भोथियाएल देख सुचित्राक ममत्व जागल। बाजल-

"माए, हमर चिन्ता तोरा एतबे धरि करक चाहिऐ जेते धरि अवोध बच्चासँ नव दुनियाँक मनुख बना बिआहि नव सृजनक दुनियाँक सीमानपर पहुँचा रहल छैं। अनेरे कोन सोनाक हँसुलीक चर्च करै छैं।"

सुचित्राक विचार निर्मला काकीक विचारमे ओहेन धक्का मारलक जे जिन्जीर खोलने बिना केबाड़ खुलि गेल। बजली-

"बेटी सुचित्रे, चीज गेल तँ गेल। मुदा मनमे रोपल जे मनोरथ छल, ओहो आइ चैल गेल। बाल-बच्चाक सुख-दुख माए-बाप नै बुझहै, माए-बापक सुख-दुख बेटा-बेटी नै बुझहै, तखन अनेरे किए इतिहासो आ समाजोशास्त्र परिवारक परिभाषा करैए। ओकरा कोन दरकार छै जे अनेरे अपन किताबक पन्ना दुरि केने अछि?"

निर्मला काकीकेँ हेराइत देख सुचित्रा भरि पाँज समेट बाजल-

"माए, चीजक चर्च नै, अपन सोग की छौ से कहि दे। आगू दिन काज देत।"

सुचित्राक मधुआएल विचार सुनि निर्मला काकीक मन उमैड़

गेलैन! बजली-

"बुच्ची, बिच्चेमे बात हेरा-ढेरा जाइए तँए तीनटा बात कहबह। सएह पहिने कहि दइ छिअ, मन पाड़ि-पाड़ि दिहऽ।"

अपन हेराएल-भँसियाएल जिनगीक बात जहिना लोक बिसैर जाइए तहिना भरिसक माइयोकेँ भऽ रहल छेलैन।

सुचित्रा मने-मन विचारए लागलि, जहिना घाकेँ खील, पीज, खून निकालि साफ कएल जाइए तहिना बनौला पछाइत माइक विचार बुझि सकब। बातक जड़ि पकैड़ सुचित्रा बाजल-

"माए, अनेरे कोन सोग-पीड़ामे पीड़ाएल छेँ। तीनटा कोन बात छौ, से कहि दे।"

जहिना गुरुआइन अपन शिष्याकेँ छातीक हाड़ पहिरा असीरवाद दैत, तहिना निर्मला काकी बजली-

"बुच्ची, अखन धरिक पुश्तैनी परम्परामे बेटीक बिआहमे सोनक महत रहल अछि। तँए मनोरथ छल।"

माइक बात सुनि सुचित्राक मन मिसियो भरि विचित्र नै भेल। घा बहबैकाल माइयो जहिना बच्चाक भविस देख पाथर जकाँ छाती बना लइ छैथ, तहिना माइक बेथाक कथा सुनैले सुचित्रा छातीपर पाथर रखि बाजल-

"एतबेटा बातले तूँ एते बेथाएल छेँ? तूँ हमरा पढ़ल-लिखल आदमी बना दुनियाँक बीच ठाढ़ कऽ रहल छेँ, जेतए बनियोँ-वेकाल बजैए जे 'साए भरि सोना नै नीक एकरती बुधि नीक।"

सुचित्राक तोष भरल बात सुनि निर्मला काकी बजली-

"बुच्ची, जे सुइत तोराले रखने छेलौं, ओ माए देने छल, माइयोकेँ माइए देने छेलखिन। धरोहर छल। अनका जकाँ अखन तक चोर-

डकैतसँ भेँट नै हुअ देने छेलिऐ, मुदा वन्हकीदारक भाँजमे चीज चैल गेल।”

माइक विचारक तड़ी देख सुचित्रा आरो तरसँ बमकोला दैत बाजल-

“माए, इतिहास बजैए, आइए नै सभ दिनसँ धनक बैमानी-शैतानी होइत रहल अछि, तोरो भेलौ। हमरे दइतेँ किने, मन मानि गेल जे तूँ देलेँ, हम लेलौं।”

सुचित्राक विचार सुनि निर्मला काकीक मन चौदहो भुवनक सातम सीढ़ी पार कऽ गेली। आठम सीढ़ीपर पएर रखि बजली-

“बुच्ची, भुमकममे बुड़हाक देहपर घर खसि पड़लैन। ओही इलाज करबैमे सुइत बन्हकी लगेलौं। अही आशापर लगौने रही जे जहिया सुचित्रा बिआह करै-जोकर हएत तहिया ने काज हएत, ताबे बेगरता सम्हारि लइ छी। मुदा डकैती कहि सुइत बेइमानी कऽ लेलक।”

माइक बात सुनि सुचित्रा बाजल-

“अहीले एते सोग करै छेँ, चोर-बैमान चोरे-बैमान रहत, साउध-साउधे रहत।”

❑ साभार : लजबिजी

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

एक तम्मा सिदहा

एक घोंट पानि

करतब

पहाड़क बेथा

उदय-प्रलय

खेतक बँटवारा

पैंतीस साल पछुआ गेलौं

माघक चाह

घबाह ट्यूशन

चोर-सिपाही

उरीन

गुणहीन

बड़की माता

पोखला कटहर

राकशे रहि गेलौं

मुफतिया माल

हेराएल जिनगी

करिछौंह मुँह

कियो ने पुछैए

अँगनेमे हेरा गेलौं

वर्थ डे

सजल स्मृति

सेहन्ता

धोखा

एक मुठी घास

डुमैत जिनगी

हूसि गेल

ठेलाबला

जीविका

धर्मनाथ

किरदानी

भरमे-सरम

धोखा केतए भेल

मीनी भ्रष्टाचार

सोमनाकाका

पटियाबला

रिक्साबला

पसेनाक धरम

दूधबला

केना जीब?

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर

एगच्छा आमक गाछ

प्रीगर शत्रु

दहेजुआ गाए

गठूलाक गारि

गण्डा

अब-तब

झूठे

उजगी

जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू

नोकरिहारा

अनका बेर ओंघी

लगबे ने कएल

ओ दिन

पान पराग

फोंक मकड़

झकास

ठोररंगू

हकार

ओझरी

दोती बिआह

कचहरिया रोग

नटकिया गति

भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल

पछताबा

परिवारक प्रतिष्ठा

पागलखाना

खाए चाहैए

गामे उपैट गेल

खतियाएल घर

किछु ने फुरैए

तिलकोरक तरुआ

पटोर

बेटाक चलैत

उग्रघारा

बेटीक कुभेला

दोहरी हाक

खिलतोड़

बापक चलैत	पाइक इज्जत
गाम बिसैर गेल	माघक घूर : 1
ठकहरबा	मधुमाछी
समैयक बेरबादी	मति-गति
न्याय चाही	नैहराक धाड़
रिजल्ट	माघक घूर : 2
बाल बोध	चहकल विचार
अपन गारि अपन दुआरि	राक्षसक झड़
सरही सौबजा	सद्विचार
अउतरित प्रश्न	पोखरिक सैरात
पनियाहा दूध	मनकमना
कन्हा भँट्टा	कटौज
फलहार	किछु ने
गावीस मोइस	हथियाएल खुरपी
निनिया देवीक आराधना	झुटका विदाइ
कनियाँ-पुतरा	खुदियाएल
मानसरोवर यात्रा	गलती अपने भेल
गामक शकल-सूरत	बत्तु
मितक प्रयोजन	असिरवाद उलैट गेल
चैन-बेचैन	उड़हैड़

पेटगनाह
गंगा नहेलौं
बकठाँइ
गुलेती दास
खर्च

डॉक्टर हेमन्त
मनुखक मूल्य
तीन जुगिया भाय
आश्रम नहि सोभाव बदली
मायराम

शुभचिन्तक
विधवा बिआह
वैष्णवी भगवती
प्रेमी
शंका

मुइलो बिसेबैन
प्रतिभा
केतौ नै
हमर कोन दोख
असगरे

डीहक बटबारा
मूलधन
छूआ
लफ साग
नहरकन्हा

अपन सन मुँह
पाप आ पुण्य
चोरक चोरबती
मातृभूमि
कटा-कटी

हरदीक हरदा
बेरपर
झगड़ाउ-झोटैला
फॉगु
बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

उलबा चाउर
पतझाड़
धरम काँट
तिलासंक्रान्तिक लाइ
कठफल

असहाज	बेटीक लिलसा
बाबा बेलेश्वरनाथ	पुरान साड़ी
भोँटक गहमी	अभिनव अनुभव
जेतए जे हौउ	अड़िकट्टा चोर
नौमीक हकार	उझट बात
एकतीस मार्च	बहिन
अगिलह	मर्माहत
स्वर्ग आ नर्क	अलपुरिया बरी
पीरारक फड़	दुधियाएल बरखा
मनकेँ फुसलबै छी	चोरूक्का झगड़ा
अकास दीप	त्राहि-कृष्ण
माघ नहाइले जाएब	संकट
अतहतह	काँच सूत
चौरचनक दही	बीरांगना : 2
तेतर भाइक कविता	सोग
अपन रोपल गाछी भुताहि	विघटन
डभियाएल गाम	बगदल गाम
अखरा-दोखरा	कलंक
गाछपर सँ खसला	उनटन
सोनाक सुइत	विद्गूताक मद

क्रान्तियोग
पाही पट्टी
गोहाइर
मरियाएल मन
मदैत नै चाही

बोनिहारिन मरनी
आशापर पानि पड़ल
बुढ़िया दादी
बाबी
बुधनी दादी : 1

क्रियाशील
समझौता
रत्न गमेवाक दुख
भाइक सिनेह
हारि

जाम
विदाइ-दैछना
टाइपिस्ट
गजपट खेती
सुआद

अनेरुआ बेटा
कछमछी
समदाही
वारंट
एकाग्रचित

गलगर भैंस
प्रवल इच्छा
अधखरूआ
मोहरा
भँसियाएल बाल-बोध

दूटा पाइ
अपने केलहा
समुद्री विद्या
बीरांगना : 1
अनुशासन

बिहरन
हारि-जीत : 1
अपसोच
अपन पुरखाक डीह
खलओदार

पढ़ल सुगा बौक	गामक मुँह फेर देखब
गेल माघ उनतीस दिन बाँकी	गुड़ा-खुद्दीक रोटी
मान	चौकीदारी
बालमण्डली	देव उठान
नीक बोल	अनदिना
कियो ने	सुमति
स्वरोजगार	आशापर पानि फेर गेल
झिसीक मजा	चर्मरोग
लतियाएल जिनगी	केतौ ने रहलौं
सजमनियाँ आम	मुँह-कान
त्रिकालदर्शी	बाबाक बाग-बगिया
सड़ल दारीम	पुरस्कार
बटखौक	फुसियाह
स्मृति शेष	गामक सुरता
बिसवास	कचोट
हाथी आ मूस	जेकर चुन तेकर पुन
गामक बान्ह	एते दिन अपना-ले आब अनका-ले
पनचैती	रमैत जोगी बोहैत पानि
भबडाह	पनचैती पनपना गेल
दूरी	जेठुआ गरदा

खसैत गाछ	सुरता
केते लग केते दूर : 2	सगहा
कुघाटक मृत्यु	पकिया चेला
ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल	अनगढ़ चेतना
मुड़ियाएल घर	धोतीक मान
उचितवक्ता	चुप्पा पाल
हारि-जीत : 2	जन्मतिथि
हँसीएमे उड़ि गेलौं	दियरबा-भैंसुर
मनोरथ	फज्झैत
धरती-अकास	भुतलग्गू आकि भविसलग्गू
विचार हेरा गेल	सिरमा
घर तोड़ि देलिऐ	मनुखदेवा
आजुक जिनगीक आइ परीछा	अप्पन-बीरान
दोहरी मारि	सुभिमानी जिनगी
धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!	मरूभूमि
डकरा हाल	मइटुग्गर
सीरक गाछ	आने जकाँ
परतीहा खढ़	उमकी
गरदैन कट्टा बेटा	मुँहक खतियान
कर्जखौक	ओसार

बेर परहक भदवा

केलवाड़ी

हँसैत लहास

बलधकेल कटौज

कान फुटल कप

सड़क-कातक खेत

सनेस

छोटका काका

कुकुरपन

हमर बाइनिक विचार

आइ एम शॉरी

देखल दिन : 2

मेकचो

कामिनी

संगी

ठकुआएल भुसवा

बपौती सम्पैत

दादी-माँ

कचहरिया भाय

एक दिन

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। **-गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।

₹ 50

9789388421683

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452